विदर्भ स्वाभिमान

www.vidarbhswabhiman.com

संपादक - सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे

9423426199/8855019189

❖अमरावती,गुरूवार 10 से 16 सितंबर 2026 ❖वर्ष :17 ❖अंक- 13 ❖ पृष्ठ 8 ❖ मूल्य-4/-पोस्टल रजि.नं ATI/RNP/268/2025-2027❖डाक : शुक्रवार-शनिवार MAHHIN/2010/ 43881

बाबूजी के आदर्श विचार

जीवन की खुशियां

जीवन में जो दूसरों के साथ छल करता है और स्वार्थ भाव से नुकसान करता है, किसी को भी सदैव परेशान करने की मानसिकता रखता है, पैसे से भले ही बड़ा हो जाता है लेकिन वह कभी सुकून की नींद नहीं सो पाता है. ऐसे लोगों के भाग्य में जीते-जी गालियां सुनने के अलावा मरने के बाद भी गालियां सुनना ही नसीब होता है. जीवन में सदा ऐसे काम करें कि लोग जाने के बाद भी सदैव आपके स्वभाव को याद करें.

नवरात्रि तक नहीं बजा सकेंगे डीजे-बैंजो,रोक

विदर्भ स्वाभिमान,9 सितंबर

अमरावती- शहर में इस साल गणेशोत्सव से लेकर नवरात्रि उत्सव तक शहर में भी डीजे पर पाबंदी लगायी गई है. पुणे से शुरू हुई इस पहल की सराहना करने के साथ ही शहर तथा जिला पुलिस ने भी इस विषय को गंभीरता से लेते हुए तत्काल प्रभाव से यह लागू कर दिया है. इउससे गणेशोत्सव तथा नवरात्रोत्सव के दौरान क़र्कश ध्वनि प्रदूषण से लोगों को राहत मिलेगी. इसी तरह सड़क को पूरी तरह से घेरकर रखने वालों के खिलाफ भी कार्रवाई की जरूरत जताई जा रही है. शहर तथा जिला पुलिस के मुताबिक गणेशोत्सव मंडल के सभी पदाधिकारियों और शांति समिति की बैठक में सभी संबंधितों को इससे अवगत कराया गया है. गणेशोत्सव, नवरात्रोत्सव सहित सार्वजनिक आयोजनों में भी कर्कश ध्वनि पर रोक लगाने के लिए यह फैसला लिया गया है. सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिए गए निर्देश के मुताबिक यह कार्रवाई हो रही है.

भूमि स्वामित्व विधेयक लाएगी सरकार

जमीन खरीद की धोखाधड़ी पर लगेगा लगाम, डेटाबेस तैयार होंगे, गड़बड़ी भी कम होगी

विदर्भ स्वाभिमान,9 सितंबर

मुंबई- महाराष्ट्र सरकार आगामी दिसंबर तक राज्य में भूमि स्वामित्व अधिनियम लाने जा रही है. राज्य के राजस्व मंत्री ने हाल ही में (9 सितंबर 2026 को) यह घोषणा की है कि इस कानून का मुख्य उद्देश्य संपत्ति के मालिकाना हक का पक्का रिकॉर्ड उपलब्ध कराना और ज़मीन से जुड़े विवादों को कम करना है. इस अधिनियम और केंद्र सरकार की स्वामित्व योजना से जुड़ी मुख्य खबरें और बदलाव नीचे दिए गए हैं-

महाराष्ट्र भूमि स्वामित्व अधिनियम की बड़ी बातों में इनका समावेश है. फ्लैट धारकों को व्यक्तिगत अधिकार- इस कानून के लागू होने के बाद महाराष्ट्र में फ्लैट/अपार्टमेंट खरीदारों को काफी राहत मिलेगी. अब केवल पूरी सोसाइटी या बिल्डर के नाम पर भूमि रिकॉर्ड होने के बजाय, हर फ्लैट धारक का व्यक्तिगत संपत्ति रिकॉर्ड होगा.जमीन में फ्लैट मालिक के हिस्से का सटीक रिकॉर्ड होने से भविष्य में सोसाइटी के पुनर्विकास के दौरान मालिकों का पक्ष मजबूत होगा. साथ ही लोन मिलना होगा आसान बैंकों के लिए मालिकाना हक का वेरिफिकेशन करना आसान हो जाएगा, जिससे होम लोन या मॉर्टगेज मिलने में आसानी होगी. यह संपत्ति की डबल-सेलिंग (एक ही प्रॉपर्टी दो बार बेचना) और गलत प्रविष्टियों जैसे विवादों को रोकने में भी मदद मिलेगी.

डिजिटल और सुरक्षित- नए संपत्ति कार्ड डिजिटल रूप से हस्ताक्षरित और कोडेड होंगे, जिन्हें सीधे सरकारी रिकॉर्ड से ऑनलाइन डाउनलोड या सत्यापित किया जा सकेगा.

तकनीक का उपयोग- महाराष्ट्र सरकार ने भूमि दस्तावेजों के डिजिटलीकरण, सटीक मानचित्रण और संपत्ति मूल्यांकन के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर केंद्रित होगा. 1,500 करोड़ का निवेश किया है. पहले चरण में इसे मुंबई और पुणे में लागू किया जा सकता है. राष्ट्रीय स्तर पर पीएम स्वामित्व योजना यदि आपका संदर्भ केंद्र सरकार की ग्रामीण स्वामित्व योजना से है, तो इसकी प्रगति इस प्रकार है.करोड़ों प्रॉपर्टी कार्ड जारी किया जा सकेगा. पंचायती राज मंत्रालय की इस केंद्रीय योजना के तहत देश के 2 लाख से अधिक गांवों में 3 करोड़ से ज्यादा प्रॉपर्टी कार्ड तैयार और वितरित किए जा चुके हैं. सरकार के इस विधेयक से जमीन संबंधी धोखाधड़ी के साथ ही होने वाली गड़बड़ियां भी रूकेंगी.

डफरीन कांड, ४ अधिकारी निलंबित

मुंबई/अमरावती- समूचे राज्य को हिलाकर रखने वाले अमरावती जिला महिला अस्पताल डफरीन अग्निकांड मामले में राज्य के स्वास्थ्य विभाग ने कार्रवाई करते हुए 4 अधिकारियों सहित 5 को निलंबित कर दिया है. अस्पताल को सेवा देने वाली दो कंपनियों को ब्लैक लिस्टेड करने की प्रक्रिया भी आरंभ करने की जानकारी मिली है. इस घटना में दुनिया देखने से पहले ही तीन नवजात जलकर खाक हो गए थे. घटना को लेकर तीव्र असंतोष व्याप्त था और राज्य सरकार ने मामले की गहन जांच शुरू की थी.

इस गंभीर मामले में लोकनिर्माण विभाग के भी कुछ अधिकारियों पर कार्रवाई की संभावना जताई जा रही है.

मामले की उच्चस्तरीय जांच कराने के बाद प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर यह कार्रवाई की गई है. इस मामले में मेर्स एओवी इंटरनेशनल एलएलपी को ब्लैक लिस्ट करने की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए गए हैं. वहीं शिलार कंपनी की सेवाओं में प्राथमिक रूप से लापरवाही पाई गई है. इससे इस कंपनी के खिलाफ भी कार्रवाई की संभावना जताई जा रही है.

विदर्भ स्वाभिमान

संपादकीय

मौसम ने फिर बिगाड़ा किसानों का खेल,परेशान

प्रकृति के साथ किए जा रहे खिलवाड़ के कारण बदले मौसम चक्र की सर्वाधिक मार किसानों को झेलनी पड़ रही है. अमरावती जिले में लंबे समय से बारिश के गायब होने के कारण किसानों की फसलें सूखने की कगार पर पहुंच गई है. यह दुर्भाग्य की बात है कि देश में सबसे ज्यादा मेहनत किसान करने के बाद भी सबसे अधिक तकलीफ उसे ही होती है. ऐसे में प्राकृतिक मार ने सदा ही किसानों को बेहाल कर दिया है. उस पर फिर एक बार ऐसी ही नौबत आ गई है. फसलों की स्थिति पानी के अभाव में सूखने जैसी हो गई है. जिन किसानों के पास स्वयं का मोटरपंप है, ऐसे किसानों की स्थिति ठीक है लेकिन जिनके पास स्वयं का पंप नहीं है, ऐसे किसानों के लिए समस्या और अधिक गहरा गई है.

अमरावती में हजारों की संख्या में किसान मौसम की मार को लेकर बेजार नजर आ रहे हैं. मौसम की बेरुखी एक बार फिर किसान की मेहनत पर भारी पड़ती दिखाई दे रही है. कहीं बारिश का लंबा खंड फसलों को सुखा रहा है, तो कहीं अचानक होने वाली तेज बारिश खेतों में खड़ी फसल को नुकसान पहुंचा रही है. महाराष्ट्र के कई इलाकों में पावस के लंबे खंड से खरीफ फसल संकट में है. किसान के लिए मौसम अब सिर्फ प्राकृतिक परिस्थिति नहीं, बल्कि उसकी पूरी अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा जोखिम बन गया है. बीज, खाद, मजदूरी और सिंचाई पर खर्च करने के बाद जब फसल तैयार होने लगती है, तभी मौसम करवट लेता है. सितंबर की बारिश भी इस वर्ष फसलों के लिए बेहद महत्वपूर्ण मानी जा रही है.

विडंबना यह है कि नुकसान होने के बाद पंचनामे, बैठकें और मुआवजे की घोषणाएं तो होती हैं, लेकिन किसान को समय पर राहत मिलना अभी भी बड़ी चुनौती है. अब जरूरत केवल नुकसान भरपाई की नहीं, बल्कि मौसम आधारित पूर्व नियोजन, प्रभावी फसल बीमा, जलसंधारण, पिक विविधीकरण और त्वरित नुकसान आकलन की है.सरकार को मौसम के बदलते मिजाज को देखते हुए कृषि नीति में भी बदलाव करना होगा. किसान को हर साल आसमान की ओर उम्मीद से देखने के लिए मजबूर करने के बजाय ऐसी व्यवस्था बनानी होगी, जिसमें मौसम की मार के बावजूद उसका परिवार और उसकी खेती सुरक्षित रह सके.किसान की मेहनत मौसम के भरोसे नहीं, मजबूत व्यवस्था के भरोसे टिकनी चाहिए यही समय की सबसे बड़ी मांग है.प्रकृति की मार के कारण पिछले तीन-चार मौसम से किसान त्रस्त हैं. उनकी ही समझ में नहीं आ रहा है क्या करें. नेताओं को कमीशन से ही फुर्सत नहीं रहने के कारण किसानों के लिए किसी को कोई लेना-देना नहीं होने जैसी स्थिति है. वह आखिर किससे उम्मीद करे.

विघ्नहर्ता पर भी महंगाई की मार

विदर्भ स्वाभिमान
www.vidrabhswabhiman.com 9423426199

मंहगाई से केवल मानव ही नहीं बल्कि विघ्नहर्ता भी अछूते नहीं है. गणेशोत्सव 14 सितंबर से आरंभ हो रहा है. हमारे सभी पाठकों, विज्ञापनदाताओं के साथ ही सभी देशवासियों और समूचे विश्व में जहां भी रिद्धि-सिद्धि के दाता का पर्व मनाया जाता है, वहां के सभी भक्तों को हार्दिक शुभकामनाएं. गणेशोत्सव को लेकर जहां सैकड़ों मूर्तिकारों को रोजगार मिलता है, उसके साथ ही बाजार में भी इसकी रौनक बढ़ती है. महंगाई के इस दौर में वर्तमान में गणेश मूर्तिया भी महंगी होने के कारण बाप्पा भी महंगाई से अछूते नहीं रहने का अनुभव किया जा रहा है. बढ़ती महंगाई ने जहां लोगों को त्रस्त कर दिया है, वहीं यह भी उतना ही सच है कि त्यौहारों की खुशियां अब केवल पैसे वालों तक सीमित हो गई है. गरीब, किसान, मजदूर वर्ग तथा निजी नौकरीपेशा लोगों के लिए यह कठिन होता जा रहा है. जीवनावश्यक वस्तुओं की कीमतों में जिस तेजी से वृद्धि हो रही है और महंगाई के कारण गरीबों की कमर टूट रही है, उसके चलते यह कहना गलत नहीं होगा कि करोड़पति को त्यौहार मनाने की फुर्सत नहीं है और गरीब तथा मध्यमवर्गीयों के लिए परिवार की आजीविका के चलते त्यौहार मनाने का समय नहीं मिल पा

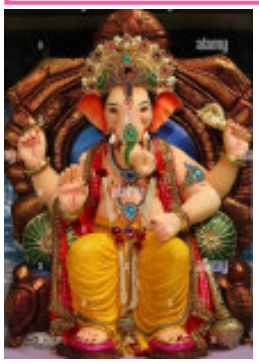

रहा है. किराणा साहित्य की चार महीने की सूची का बारीकी से अवलोकन करने के बाद यह स्पष्ट दिखाई देगा कि जीवनावश्यक वस्तुओं में आग लगी है.

इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता है कि मूर्ति निर्माण में बड़ी मेहनत होती है. लेकिन इसके साथ ही प्राइवेट नौकरी करने वालों के लिए वर्तमान में स्थिति अत्याधिक दयनीय हो गई है. उनकी आमदनी अठन्नी और खर्चा रूपैया रहने के कारण पूरा परिवार सदैव तनाव में रहने की नौबत आन पड़ी है.

शहर में इस बार बड़ी संख्या में मूर्तियों की दुकानें सज गई हैं. पिछले साल की तुलना इस साल गणेश मूर्तियों की कीमतों में 25-30 फीसदी तक बढ़ोत्तरी होने के कारण गरीबों के पास मूर्ति का बजट गड़बड़ा गया है. मिट्टी की मूर्तियां पर्यावरण के लिए बेहतरीन होती है. लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि इनकी फिनिशिंग प्लास्टर ऑफ पेरिस की तुलना में कम होती है. लेकिन शहर में पिछले कुछ वर्षों की तुलना में अब मिट्टी की मूर्तियों को लेकर लोगों का भरोसा बढ़ रहा है और पर्यावरण संतुलन में योगदान देने के लिए इन मूर्तियों की खरीदी भी बढ़ी है. इको फ्रैंडली की मांग बढ़ने के साथ ही बड़ी संख्या में लोगों द्वारा मिट्टी की गणेश मूर्ति की खरीदी की जा रही है. गरीबों की भावनाएँ सदैव शुद्ध रहती हैं और हर स्थिति में खुशियां मनाने का विचार रहता है. लेकिन बढ़ती महंगाई ने उनकी हर खुशियों पर तमाचा मारने से इंकार नहीं किया जा सकता है. कुल मिलाकर फिलहाल की स्थिति में लोगों के लिए त्यौहारों की खुशियां भी कम होती जा रही हैं.

किसानों के विश्वसनीय साथी का पर्व है पोला

पोला पर्व पर विशेष लेख

भारतीय संस्कृति महान है. इसमें केवल मानव ही नहीं बल्कि जो उनके जीवन को खुशियों से भरने में भूमिका निभाते हैं, ऐसे सभी जीवों के लिए भी सम्मान और कृतज्ञता प्रकट किया जाता है. महाराष्ट्र में किसानों के विश्वसनीय साथी और किसानों द्वारा परिवार का सदस्य माने जाने वाले बैलों के लिए भी सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करने का पर्व पोला होता है. इस दिन किसान अपने पारिवारिक सदस्य के रूप में सम्मान देने वाले बैलों को सजाते हैं,संवारते हैं और उनका स्नान कर उन्हें भोजन कराते हैं.

पोला केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि भारतीय कृषि संस्कृति, पशुप्रेम और कृतज्ञता की अनूठी परंपरा है. महाराष्ट्र सहित विदर्भ के ग्रामीण क्षेत्रों में पोला पर्व बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है. यह पर्व किसानों के जीवन में बैलों के महत्व को रेखांकित करता है और उनके प्रति सम्मान व आभार व्यक्त करने का अवसर देता है.

खेती-किसानी में बैलों का योगदान सदियों से महत्वपूर्ण रहा है. खेत की जुताई से लेकर कृषि के अनेक कार्यों में बैल किसान के सच्चे साथी रहे हैं. किसान अपने इन सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए पोला पर्व पर बैलों को स्नान कराकर सजाते हैं. उनके सींगों पर रंग लगाया जाता

है, गले में घंटियां और आकर्षक सजावट की जाती है तथा उन्हें विशेष रूप से तैयार किया जाता है.इस दिन बैलों को विश्राम दिया जाता है. किसान परिवार परंपरागत विधि से बैलों की पूजा-अर्चना करते हैं और उन्हें पौष्टिक आहार तथा पकवान खिलाते हैं. गांवों में सजे-धजे बैलों की शोभायात्रा और विभिन्न पारंपरिक कार्यक्रम पर्व की खुशियों को और बढ़ा देते हैं. बच्चों के लिए बच्चों का पोला भी विशेष आकर्षण होता है, जिसमें लकड़ी या मिट्टी से बने बैलों की पूजा की जाती है.पोला पर्व हमें यह संदेश देता है कि प्रकृति, पशु और मनुष्य का संबंध केवल उपयोग का नहीं, बल्कि संवेदना और सह-अस्तित्व का है. आधुनिक कृषि व्यवस्था में मशीनों का उपयोग बढ़ा है, फिर भी पोला हमारी कृषि परंपराओं और ग्रामीण संस्कृति की स्मृति को जीवंत बनाए हुए है. आज आवश्यकता है कि पोला जैसे पर्व केवल औपचारिक उत्सव बनकर न रह जाएं. पशुओं के प्रति दया, उनकी उचित देखभाल और किसानों के प्रति सम्मान की भावना हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बने. अन्नदाता किसान और उसके मेहनती साथी बैल दोनों ही समाज के लिए अमूल्य हैं.पोला पर्व इसी कृतज्ञता, परिश्रम और सह-अस्तित्व की भावना का उत्सव है. यह पर्व हमें सिखाता है कि जिसने हमारे जीवन और अन्न उत्पादन में योगदान दिया है, उसके प्रति सम्मान व्यक्त करना ही सच्ची संस्कृति है. यह पर्व जहां बच्चों से लेकर बड़ों के लिए खुशी का पर्व रहता है, वहीं पोला पर कई स्थानों पर मेला भरता है. इससे मूर्तिकारों को भी आर्थिक मजबूती मिलती है.

विदर्भ स्वाभिमान

विदर्भ स्वाभिमान
यह समाचार पत्र मालिक, प्रकाशक,संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे द्वारा एस.बी.प्रिंटर्स द्वारा दत्त पैलेस गांधी चौक अमरावती में मुद्रित कर विदर्भ स्वाभिमान कार्यालय,छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती में प्रकाशित किया गया है.मोबाइल नंबर 9423426199/8855019189.अखबार में प्रकाशित होने वाले विभिन्न पत्र,साहित्य,लेखकों,कवियों के विचारों व तथ्यों पर आधारित होते हैं. इनसे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है.संपादक-सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे (संपादकीय दायित्व हेतु जिम्मेदार), मुख्य प्रबंधक- सौ.वीणा सुभाषचंद्र दुबे.Email-vidarbhäswabhiman@gmail.com.www.vidrabhswabhiman.com,rni. no MAHHIN/2010/ 43881

आत्मीयता के साथ राष्ट्र का अभिमान है हिंदी

हिंदी दिवस पर विशेष क़ई हिंदी फिल्मों ने बढ़ाया है मान, विश्वभर में करोड़ों लोग समझते हैं हिंदी

विदर्भ स्वाभिमान,9 सितंबर

अमरावती- भाषा का ज्ञान सदैव दिलों को जोड़ने का काम करता है. कोई भी भाषा क्यों नहीं हो, वह आत्मीयता बढ़ाने का काम करती है. हिंदी भाषा पूरे विश्व में बोली जाती है. जिस तरह से अंग्रेजी को विश्व की भाषा कहा जाता है, वह हर देश में बोली जाती है, उसी तरह हिंदी भाषा जानने वालों की संख्या भी विश्वस्तर पर करोड़ों में है. भारत में जहां करोड़ों लोग हिंदी बोलते हैं, वहीं यह समझने वालों की संख्या भी इतनी ही है. बालीवूड की हिंदी फिल्मों भी ने भी हिंदी के महत्व को विश्वव्यापी बनाने से इंकार नहीं किया जा सकता है. यही कारण है कि आज यह भारत ही नहीं तो समूचे विश्व में समझी जाने वाली भाषा बन गई है, यह कहना गलत नहीं होगा. हिंदी दिवस पर कई कार्यक्रम जहां होते हैं, वहीं शहर में विभिन्न संगठनों द्वारा भी इसके महत्व को बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है. इसके लिए हिंदी काव्य गोष्टी तथा अन्य माध्यमों का उपयोग किया जाता है.

भाषा को संवाद का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है. हर भाषा का अपना महत्व है. विद्वान तथा अपनापन प्राप्त करने के लिए अधिकाधिक भाषाएं सीखनी चाहिए. भाषा जोड़ने का माध्यम होती है. ऐसे में राजभाषा हिंदी तो भारतीय भाषाओं की सिरमौर है. अंग्रेजी के बाद जहां पूरे विश्व में इस भाषा को समझने वाले मिल जाते हैं, वहीं दूसरी ओर इस भाषा की समृद्धि में हिंदी फिल्मों की महत्वपूर्ण भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता है. बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन को हिंदी में महारथ हासिल है वह अक्सर एक्स अकाउंट पर हिंदी में ही ट्वीट करते हैं. हाल ही में हिंदी भाषा के महत्व में हिन्दी फिल्मों की भूमिका को कोई भी इंकार नहीं कर सकता है. हिन्दी भाषा में एकता, सभी की भावनाओं को समझने के साथ ही किसी तरह का भेदभाव नहीं करने की ताकत है. हॉलीवुड सुपरहीरो फिल्म डेडपूल में राज कपूर के क्लासिक सिनेमा श्री 420 का गाना मेरा जूता है जापानी...सुनाई देता है तो ऑस्कर से सम्मानित अंग्रेजी फिल्म एटर्नल सनशाइन ऑफ द स्पॉटलेस माइंड में नायक-नायिका के एकांत के लम्हों की पृष्ठभूमि में बजता है बालीवुड फिल्म गैंबलर का गाना वादा ना तोड़. वहीं निकोल किडमैन की हालीवुड फिल्म माओलिन रग में गाने छम्मा छम्मा...(फिल्म चाइना गेट) का प्रयोग देखकर सुखद अनुभूति होती है. वैश्विक स्तर पर हिंदी की धूम बढ़ी है तो इसके प्रसार में सिनेमा की भी अहम भूमिका है.

इसमें कोई कैपिटल या स्मॉल लेटर नहीं होता है और हां आधे अक्षर को भी सहारा देने के लिए पूरा अक्षर हमेशा तैयार रहता है. कुछ इस अंदाज में हिंदी दिवस पर मातृभाषा के लिए प्रेम प्रदर्शित करते हैं महानायक अमिताभ बच्चन. अपने इंटरनेट मीडिया एकाउंट पर अक्सर वह पिता व कवि हरिवंश राय बच्चन की पंक्तियां उद्धृत करते हैं तो प्रेमचंद के साहित्य से चुने गए शब्दरूपी मोती की शोभा भी दिखती है.द कश्मीर फाइल्स और द ताशकंद फाइल्स फिल्मों के निर्देशक विवेक रंजन अग्निहोत्री हिंदी भाषा पर अच्छी पकड़ रखते हैं. वह कहते हैं, भाषा पर जितनी अच्छी पकड़ होगी, काम के संदर्भ में उतना ही उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकेंगे. मैं हिंदी में कविताएं लिखता हूं. शुद्ध हिंदी बोलता हूं. चूंकि हमारे देश में मिश्रित बोली प्रयोग की जाती है तो अपनी फिल्मों में वही भाषा रखने का मेरा प्रयास होता है.कई बार कलाकारों को हिंदी के संवाद भी अंग्रेजी में समझाने पड़ते हैं. मेरी एक फिल्म में संवाद था कि बड़ी विडंबना है. मुझे कलाकार को यह लाइन अंग्रेजी में समझानी पड़ी थी. यह हमारी शिक्षा प्रणाली की भी समस्या है. बहरहाल कलाकारों को मेरी फिल्म के संवाद सही तरीके से बोलने के लिए मेहनत करनी पड़ती है.जो कलाकार अच्छी हिंदी बोलते और समझते हैं, वह गलत हिंदी को तुरंत पकड़ लेते हैं. इसी कारण अभिनेता अमिताभ बच्चन को चेहरे फिल्म में अपना एकालाप (मोनोलॉग) स्वयं लिखना पड़ गया था. निर्माता आनंद पंडित किस्सा सुनाते हैं, चेहरे फिल्म में बच्चन साहब का एक मोनोलॉग था, जिसे मैंने बड़े लेखकों से लिखवाया था, लेकिन बच्चन साहब को वह ठीक नहीं लगा.

उन्होंने शूटिंग स्कवाई और अपनी वैनिटी वैन में जाकर पूरा मोनोलॉग स्वयं लिखा. वह 12 मिनट का एक रिकॉर्ड है. हिंदी पर उनकी जोरदार पकड़ है. मैं स्वयं हिंदी को प्राथमिकता देता हूं. एक बार मैं एक बड़े कार्यक्रम में शामिल होने के लिए अहमदाबाद गया था. कई बड़े लोगों ने अंग्रेजी में भाषण दिया. मेरी बारी आई तो मैंने कहा कि मैं हिंदी में भाव व्यक्त करना चाहूंगा. दो मिनट तक मेरे लिए तालियां बजती रहीं.रंगमंच और फिल्मों में सक्रिय अभिनेता मनोज जोशी कहते हैं कि हिंदी हमारी राजभाषा और हमारे राष्ट्र की बिंदी है.सदी के महानायक अमिताभ बच्चन का हिंदी प्रेम जगजाहिर है. यही कारण है कि आज भी केबीसी जैसे कार्यक्रम को लाखों दर्शक मिलते हैं. हिंदी को बढ़ाने में भारतीय हिंदी फिल्मों का महत्व सदैव महत्वपूर्ण रहा है. हिंदी फिल्मों के कारण हिंदी जानने वालों की संख्या में करोड़ों की वृद्धि हुई है. इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि हिंदी के बढ़ावा में इनका महत्वपूर्ण स्थान रहा है.

आत्मीयता को बढ़ाता है हर भाषा

भाषा का ज्ञान जहां आत्मीयता बढ़ाता है, वहीं हिंदी भाषा का महत्व अलग रहता है. पूरे भारत के हर प्रांत में लाखों लोग इसे समझते हैं. हर भाषा का अपना महत्व है. इसमें हमारी मातृभाषा अगर मां है तो मौसी के रूप में हिंदी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं का अपना महत्व है. हिंदी राजभाषा के साथ देश की एकता तथा अखंडता के साथ विश्वभर में बोली जाने वाली भाषा है. हिंदी दिवस पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं और राजभाषा अथवा कोई भी भाषा दिलों को जोड़ती है. **सुदर्शन गांग,बडनेरा.**

बोलचाल में सरल है राजभाषा हिंदी

वैसे तो हर भाषा बेहतरीन होती है.लेकिन राजभाषा हिंदी आत्मीयता के साथ ही राष्ट्र प्रेम तथा राष्ट्रीय एकता की ताकत को मजबूत रखने का सामर्थ्य रखती है.भाषा सदैव जोड़ने का माध्यम होती है. आप मातृभाषा में जब बात करते हैं तो आपको गर्व होता है. हमारी मातृभाषा के अलावा राजभाषा हिंदी दिलों को जोड़ने के साथ ही राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने का सामर्थ्य रखती है. विश्व भर में यह भाषा बोलने वालों की संख्या तेजी से बढ़ना ही इस भाषा का महत्व बताने के लिए काफी है. भाषा सदैव दिलों को जोड़ती है. **सुधीर महाजन,प्राचार्य पोद्दार इंटरनेशनल स्कूल,इंदौर**

मंत्री-पुरोहित ने की चक्री की अगवानी

विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की भक्तिमय सेवा विश्वास वाले भक्तों को हर पल होता है तिरूपति में अनुभव

कहते हैं कि श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से असंभव भी संभव हो जाता है. कलयुग के देवता भगवान व्यंकटेश्वर बालाजी के करोड़ों भक्त विश्वभर में फैले हैं. पिछले 25 साल से उनकी भक्ति से क्या-क्या अनुभव किया है, इसको ध्यान में रखते हुए अनाथों के नाथ, निराधारों के आधार तिरूपति निवासा भगवान व्यंकटेश्वर की कथा यहां प्रस्तुत कर रहे हैं. हर गुरूवार को विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की यह भक्तिमय सेवा प्रभु चरणों में अर्पित है. निर्मल मन से प्रभु गोविंदा की भक्ति करने पर इसका अनुभव आप भी कर सकते हैं.तिरूमल तिरूपति देवस्थानम तिरूपति द्वारा प्रकाशित मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा की श्री वेंकटाचल की महिला से साभार लिया जा रहा है.जय गोविंदा,जय गोविंदा, जय गोविंदा.डिजिटल संस्करण
www.vidarbhswabhiman.com/9423426199

मानो धरती ने जनना है ऐसा सारे कपिल तीर्थ मार्ग से शुकम के आश्रम पहंचते समय तब वह व्यासात्मज स्वामी की अगवानी करने लिवा ले जाकर उन्हें एक संदर स्थल पर बिठाया. उन्होंने अपने निज योग प्रभाव से सारे लोगों को अनेक पदार्थों को समर्पित किया. साथ की हरि, हर और बह्मादियों को भोज दिया. उस अष्टमी दिन की रात को हरि गंधर्व किन्नरों के गान को सना. साथ ही रंभा आदि अप्सराओं क नाच को देखा. साम गान सन-सन कर थककर कसम शय्या पर थारी ढेर लेटकर आराम किया. तदपरांत अगले दिन नारायणपर के समय पहँच गए.

तब आकाशराज ने अपने हित मंत्री परोहित समेत चतर बलों के साथ आकर चक्री की अगवानी की. साथ ही पूजा आदि सत्कर्म किया. गली की परिक्रमा के रूप में हरि की शोभा यात्रा निकाली गयी. तब सबको लिवा लाकर पडाव-आवास पर पहंचाया गया. फिर आकामाज अपने निजी मंदिर को लौट गये. उन्होंने तोंडमान को हरि के पास भेजा उसने हरि, हर, ब्रह्मादि को भोजन करवाया. तांबूला आदि दिल्लाकर बाह अपने निजी गृह लौट गया. वहाँ गरु वाक्यानसार आकाशानराज ने मांगना स्नान करके नवग्रह यज्ञ करके विवाह कृत्य को आरंभ किया.

सूर्यास्त होने पर हरि के साथ पड़ाव में रहनेवाले ब्रह्मादि ने आराम किया. अगले दिन सूर्योदय हुआ. सभी ने उठकर स्नान संध्यादि नित्य नैमित्यिक कृत्य पूरे किए. तदपरांत हरि ने स्नान संध्यादि पूरा करके संतोष के साथ वशिष्ट मनि को देखकर कहा. 'मैं, लक्ष्मी, ब्रह्म, आप, चक्ता मांत्रिका भोजन किए बिना निष्ठा के साथ रहना है ना. उसी प्रकार कन्या को दनेवाले आकाशराज, धरादेवी, कन्या, तोंडमान, परोहित सरों के गरु को भोजन किए बिना रहना है, ऐसा नियम होना चाहिए. बाकी सभी भोजन कर सकते हैं. इसलिए शीघ्र ही ब्रह्मण-भोजन की तैयारी करवाइए.' हरि की इन बातों को सन कर वशिष्ट ने कबेर को इस परे वाकयात की जानकारी दी.

उसके बाद वेंकटाद्रि के नायक श्री वेंकटेश्वर प्रातःकाल कर, सवर्ण वस्त्रों से, भूषणों से ससजित होकर गरुड़ जैसे घोड़े प होकर 'वहाँ होकर आऊँगा' ऐसा पद्मावती को मनाकर, बाद मे वकला से तथा वराह स्वामी को बताकर आनंद के साथ निक शीघ्र ही करवीरपर पहँचकर वहाँ पर लक्ष्मी के मंदिर में रहनेवाल में पहँच गए. उस भवन में लक्ष्मी की खोज की. वहाँ पर लक्ष्मी नहीं पड़ी. इससे श्रीनिवास को बड़ी चिंता हई. दःखी होकर श्रीनिवास को कछ नहीं सूझा. आखों से आसू बहाने लग. होकर लक्ष्मी की खोज बार-बार करने लगे. दीनता में सोच में 'अहो ! मझ पर बिना किसी मोह के लक्ष्मी इतने दिन यहाँ रह जाकर कहाँ छिप गयी है?

मैं और उसके लिए कहाँ-कहाँ खोज इस रूप में सोचते चिंता करते हुए वहाँ रह नहीं सके. वहाँ से पहाड़ों के पास जाकर उन्हें देखते हुए इस रूप में कहा- 'हे गि वृक्ष ! हे किन्नेरांगनाएँ! मेरी लक्ष्मी को जानते हैं? वह कहाँ है. हे भील वीर ! यहाँ लक्ष्मी को देखा है? हे सर! हे मनिवर ! आपने कहीं देखा है मेरी लक्ष्मी को ? मझे धोखा देकर वह गयी. उसे देखे बिना मैं अब रह नहीं सकता हूँ. इसलिए जिसने को देखा है मझे दिखाइए.'

हरि की इन बातों को सनकर ज रूप में कहा. 'हे देव! देव! महात्मा ! वे इन दिशाओं में नहीं वे कहाँ है यह स्पष्ट रूप में हम नहीं जानते हैं. तब आपको सकते हैं? हे शेषगिरि वासा!' यह सनकर श्रीनिवास चारों ओर लक्ष्मी को ढूंढने लगे.हे देव! आपके इस तप से स्मा बेची संतष्ट होकर यहाँ पर आप विखाई नहीं पड़ेगी.

इसलिए यहाँ से ठीक दक्षिण की दिशा में प्रसिद्ध प्रदेश में कृष्णा नानक नदी बहती है. उसके द्राविंशति योजन दूरी पर सुवर्णमुखी न्तान्सक नदी बहती है. उस नदी के उत्तर तट पर खड़े होकर तापसी बनकर कुंभस्तंभव के पूरब में रहनेवाले सिद्ध स्थल पर स्वर्ग नेवाले एक सवर्ण कमल को मंगाकर वहाँ पर गाढ़ना चाहिए. उसी समय पूरब दिशा में दिवाकर के लिए मंदिर बनाकर उन्हें उसमें प्रतिष्ठा करके पूजा करने से वाह कमल अत्यंत शोभा के साथ खिल उठेगा. ऐसा कहकर आगे बढ़े.

गणेशोत्सव की तैयारी पूरी, 14 को शान से बिराजेंगे रिद्धि-सिद्धि के दाता विघ्नहर्ता

बच्चों से लेकर बड़ों में अपार उत्साह, हों गे भक्तिमय कार्यक्रम

विदर्भ स्वाभिमान,9 सितंबर

अमरावती- शहर के साथ ही जिले में गणेशोत्सव की तैयारियां पूरी हो गई हैं.कई मंडलों के मंडप का काम पूरा हो गया है. लेकिन अंतिम तैयारियों पर हाथ फेरा जा रहा है. पुलिस द्वारा शांति समिति की बैठक में गणेशोत्सव के लिए कई सूचनाएं देते हुए उसका पालन करने का आग्रह किया जा रहा है. छाया कॉलोनी के साथ ही अन्य नगरों में भी गणेशोत्सव मंडल द्वारा व्यापक तैयारी की गई है. इस बार राज्य के उत्सव के रूप में घोषितगणेशोत्सव भव्य पैमाने पर मनाने के लिए प्रयास किया जा रहा है. तहसील से जिला,राज्यस्तरीय स्पर्धा का आयोजन प्रशासन द्वारा किया गया है. अमरावती शहर में खाटू श्याम से लेकर बालाजी के दर्शन कराने के लिए गणेश मंडल तैयार हो चुके हैं. मूर्तियों पर महंगाई की मार भी दिखाई दे रही है.शहर के साथ जिले में 5500 से अधिक गणेशोत्सव

मंडलों ने श्री की स्थापना तथा पूजा-अर्चना करने के लिए अनुमति मांगी है. इस बार गणेशोत्सव 12 दिनों का रहेगा और इसमें 5 दिनों तक गणपति बाप्पा के विदाई का कार्यक्रम शामिल है.

विघ्नहर्ता भगवान श्री गणेश के आगमन को लेकर शहर में भक्तिमय वातावरण बनने लगा है. विभिन्न गणेश मंडलों ने उत्सव की तैयारियां शुरू कर दी हैं. मंडप निर्माण, आकर्षक सजावट, रोशनी और सामाजिक संदेश देने वाली झांकियों की रूपरेखा तैयार की जा रही है.शहर में गणेश मूर्तियों की मांग भी बढ़ने लगी है. सोनसले मूर्तिकार, गणपति, महालक्ष्मी मूर्ति जैसे स्थानीय मूर्तिकारों के यहां गणेश प्रतिमाओं को लेकर तैयारियां दिखाई दे रही हैं.बड़े गणेश मंडलों द्वारा भव्य झांकी तैयार की जा रही है.

सांस्कृतिक तथा धार्मिक नगरी के रूप में पहचान रखती है. शहर में सैकड़ों गणेश मंडलों द्वारा गणेशजी की आराधना की जाती है. इस दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है.कई गणेश मंडलों द्वारा आजादी के बाद से ही गणेशोत्सव मनाया जा रहा है. इन मंडलों द्वारा हर साल विभिन्न आकर्षक झांकी बनाई जाती है.मंडलों में जारी तैयारी को अंतिम रूप दिया जा रहा है.

विदर्भ स्वाभिमान

महंगाई कल, आज और कल

बढ़ती महंगाई से गरीब,मध्यमवर्गीय परिवारों की हालत खराब, तनाव ने जीना किया मुश्किल

विशेष लेख- पुखराज राजपुरोहित

महंगाई सुरसा की तरह बढ़ने वाली राक्षसी है. लेकिन इसकी सबसे अधिक मार गरीब और मध्यवर्गीय तथा निजी नौकरीपेशा लोगों पर पड़ती है. यही कारण है कि यह वर्ग सदैव परेशान रहता है. 1990 में 100 रूपए की क्या कीमत थी, थैला भर सामान आता था, आज इसकी क्या कीमत है,निश्चित ही बढ़ती सुविधाएं, बढ़ती स्पर्धा भी इसके लिए जिम्मेदार है.आमदनी अठन्नी,खर्चा रूपैया वाली स्थिति ने पारिवारिक तनाव बढ़ा रहा है.महंगाई के कारण खुशियां उड़न छू हो गई है. सबसे सुखी सरकारी नौकरी वाले तथा व्यापारियों को कहना गलत नहीं होगा.

इसके बजाय हमें बड़ी तस्वीर देखनी चाहिए.1990-91 में प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय लगभग 6,126 सालाना थी.आज यह 1,92,774 है.अर्थात अर्थव्यवस्था में कमाई की क्षमता बहुत बढ़ी है.लेकिन कीमतों और जरूरतों में भी बड़ा बदलाव आया है.और यहीं कल, आज और कल एक साथ दिखाई देते हैं.

कल 1990-कम आय.कम कीमतें.कम विकल्प.कम सुविधाएं.कम खर्च वाली जीवनशैली.लेकिन बचत की क्षमता भी सीमित थी.

आज 2026-आय ज्यादा,अवसर ज्यादा,सुविधाएं ज्यादा,लेकिन खर्च भी ज्यादा. जरूरतें ज्यादा.प्रतियोगिता ज्यादा,और भविष्य की आर्थिक चिंता भी ज्यादा.

कल 2046-यहीं असली सवाल है.आज पैदा हुआ बच्चा 20 साल बाद किस दुनिया में काम करेगा?उसकी कमाई कितनी होगी?उसके घर का खर्च कितना होगा? शिक्षा कितनी महंगी होगी? इलाज कितना महंगा होगा? घर खरीदना कितना मुश्किल होगा? और आज का ?1 लाख तब कितना काम आएगा? इन सवालों का कोई निश्चित जवाब आज हमारे पास नहीं है.लेकिन एक बात निश्चित है. पैसे की कीमत समय के साथ बदलती है.

इसलिए सिर्फ कमाई बढ़ाना काफी नहीं है, मान लीजिए किसी व्यक्ति की आय हर साल 8 प्रतिशत बढ़ती है.लेकिन उसके जीवन के जरूरी खर्च 6 प्रतिशत बढ़ रहे हैं.तो वह आगे बढ़ रहा है. लेकिन अगर उसकी आय 5 प्रतिशत बढ़ती है और जरूरी खर्च 7 प्रतिशत बढ़ते हैं, तो उसकी बढ़ने के बावजूद उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है.यही कारण है कि केवल सैलरी बढ़ना आर्थिक मजबूती नहीं है.

इन्कम,खर्च बराबर बचत

और फिर सेविंग-समय-निवेश बराबर भविष्य की सुरक्षा.यह गणित जितना जल्दी समझ आए, उतना अच्छा.असली सवाल 100 का नहीं है, हम अक्सर पूछते हैं, 1990 के 100 आज कितने रुपये के बराबर हैं?

यह सवाल गलत नहीं है.लेकिन यह अधूरा है.असली सवाल है 1990 में 100 कमाने में कितनी मेहनत लगती थी?आज 100 कमाने में कितनी मेहनत लगती है? आज कमाए गए 100 में से परिवार के पास वास्तव में कितना बचता है? और आज बचाए गए? 100 की 20 साल बाद कितनी ताकत बचेगी? यही असली आर्थिक आईना है.

अगली पीढ़ी के लिए हमें क्या छोड़ना है? सिर्फ पैसा? शायद नहीं.हमें बच्चों को यह समझाना होगा कि पैसा कमाना महत्वपूर्ण है, लेकिन पैसा बचाना और उसकी परचेसिंग पॉवर बचाना उससे भी महत्वपूर्ण है.आज 10,000 बचा लेना अच्छी बात है.लेकिन उसे 20 साल तक बिना सोचे घर में रख देना आर्थिक योजना नहीं है.आज 1 लाख होना अच्छी बात है.लेकिन यह समझना ज्यादा जरूरी है कि वह 1 लाख भविष्य में क्या कर पाएगा.आज 50,000 महीने की आय होना अच्छी बात है.लेकिन अगर पूरा 50,000 खर्च हो जाता है तो सवाल आय का नहीं, आर्थिक अनुशासन का भी है.

यह लेख किसी एक सरकार, पार्टी या व्यवस्था के खिलाफ नहीं है महंगाई किसी एक सरकार की बनाई हुई चीज नहीं है.यह अर्थव्यवस्था का हिस्सा है.कभी महंगाई बहुत बढ़ती है.कभी कम होती है.

कभी किसी वस्तु की कीमत तेजी से बढ़ती है.कभी दूसरी वस्तु सस्ती हो जाती है.भारत की अर्थव्यवस्था ने पिछले 35 वर्षों में बड़ी प्रगति भी की है.इस प्रगति को नकारना भी गलत होगा.लेकिन यह मान लेना कि [illegible] या प्रति व्यक्ति आय बढ़ने से हर परिवार आर्थिक रूप से सुरक्षित हो गया है यह भी गलत होगा.देश की तरक्की और परिवार की आर्थिक सुरक्षा दो अलग बातें हैं.

आखिर में एक सवाल आपसे...

आज अगर आपके पास 1 लाख हैं तो शायद आप खुश होंगे.लेकिन क्या आपने कभी बैठ कर हिसाब लगाया है कि 2036 में इस 1 लाख की परचेसिंग पावर कितनी होगी? 2046 में कितनी होगी?2056 में कितनी होगी? और उससे भी बड़ा सवाल आज से 20 साल बाद आपकी कमाई कितनी होगी और आपके परिवार की जरूरतें कितनी होंगी? यही वह सवाल है जो हमें आज पूछना चाहिए.क्योंकि भविष्य अचानक महंगा नहीं होता.भविष्य हर साल थोड़ा-थोड़ा महंगा होता है.और हमें पता तब चलता है, जब बहुत देर हो चुकी होती है.

इसलिए अगली बार जब कोई कहे, हमारे जमाने में 100 में बहुत कुछ आ जाता था.तो सिर्फ मुस्कुराइए मत.एक पल रुककर खुद से पूछिए- मेरे आज के 100 की ताकत कल कितनी रहेगी? और फिर दूसरा सवाल पूछिए मैं आज जितना कमा रहा हूं, क्या मेरी कमाई भी मेरी जरूरतों और महंगाई की रफ्तार से तेज बढ़ रही है? क्योंकि असली मुकाबला महंगाई से नहीं है.

असली मुकाबला समय से है.कल बदल चुका है. आज हमारे सामने है.और आने वाला कल आज हम क्या कमाते हैं, क्या खर्च करते हैं, क्या बचाते हैं और क्या सीखते हैं,इसी से तय होगा.यही है कल, आज और कल का आर्थिक आईना.महंगाई का आकलन यहां पर प्रस्तुत किया गया है. आगामी समय में भी इसी तरह के विभिन्न विषयों को हम प्रमुखता से जनता के सामने लाने का प्रयास करेंगे. महंगाई ऐसी सुरसा है, जिसका मुंह सदैव बढ़ता ही जाता है. समय के साथ भी महंगाई लाखों लोगों के लिए दर्द का कारण बनती जा रही है. यही कारण है कि वर्तमान में सभी के मुंह से महंगाई डायन खात जात है की भावना है.

अभिनेत्री रानी मुखर्जी का सम्मान

नई दिल्ली- हिंदी सिनेमा की लेडी सुपरस्टार रानी मुखर्जी को मुंबई के प्रभादेवी स्थित रवींद्र नाट्य मंदिर में आयोजित 62वें महाराष्ट्र राज्य फिल्म पुरस्कार समारोह में प्रतिष्ठित राज कपूर स्पेशल कॉन्ट्रिब्यूशन अवॉर्ड से सम्मानित किया गया. इसके अलावा सलमान खान के पिता सलीम खान को भी इस पुरस्कार समारोह में स्वर्गीय राज कपूर लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड 2025 मिला, जिसे हेलेन ने स्वीकार किया.महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने रानी मुखर्जी को यह सम्मान प्रदान किया.

इस अवसर पर महाराष्ट्र सरकार के सांस्कृतिक कार्य मंत्री एडवोकेट आशीष शेलार, महाराष्ट्र सरकार के प्रतिष्ठित सदस्य, गणमान्य अतिथि और फिल्म जगत की कई हस्तियां मौजूद रहीं.यह सम्मान रानी मुखर्जी के लिए बेहद व्यक्तिगत महत्व रखता है. मुंबई में जन्मीं और पली-बढ़ीं रानी ने भारतीय सिनेमा में अपने करीब तीन दशक लंबे करियर का सफर इसी शहर से शुरू किया और आगे बढ़ाया है. दिग्गज फिल्मकार और अभिनेता राज कपूर के नाम पर दिए जाने वाले इस सम्मान को प्राप्त करने पर रानी ने कहा- मेरे लिए महाराष्ट्र सिर्फ एक राज्य नहीं है. महाराष्ट्र मेरी जन्मभूमि है. मेरी कर्मभूमि है. और मेरे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है.इस सम्मान को खास बनाने वाली बात पर आगे बात करते हुए उन्होंने कहा- मुझे लगता है कि यही बात इस पल को मेरे लिए वास्तव में खास बनाती है, क्योंकि यह सम्मान मुझे मेरे अपने लोगों और उस जगह से मिल रहा है, जिससे मैं जुड़ी हुई हूं. भारतीय सिनेमा के दिग्गज राज कपूर जी के नाम पर दिया जाने वाला पुरस्कार अपने आप में मेरे लिए बेहद विनम्र और भावुक करने वाला सम्मान हैं. मैं वास्तव में उम्मीद करती हूं कि मैं इस सम्मान पर खरी उतर सकूं.

विदर्भ स्वाभिमान

महत्वपूर्ण नंबर्स

सीएम शिकायत पोर्टल	181
विद्युत सेवा	1912
पशु सेवा	1962
पुलिस सेवा	112,100
अग्नि सेवा	101
एमबुलैस सेवा	102
यातायात पुलिस	103
आपदा प्रबंधन	108
चाइल्ड लाइन	1098
रेलवे पूछताछ	139
एसीबी	1031
रेल दुर्घटना	1072
सड़क दुर्घटना	1073
सीएम सहायता लाइन	1076
क्राइम सटायर	1090
महिला सहायता	1091
पृथ्वी भूकम्प	1092
बाल शोषण सहायता	1098
किसान काल सेन्टर	1551
नागरिक काल सेन्टर	155300
ब्लड बैंक	9480044444

आत्मीयता से परिपूर्ण सेवाभावी डाक्टर हैं

महिला रोग व प्रसूति विशेषज्ञ डॉ.प्रांजल शर्मा के जन्मदिन पर विशेष

ज़ीवन में आने वाले कुछ लोग आपके दिलों में वह सम्मान प्राप्त कर लेते हैं कि आप उन्हें और वह आपको नहीं भूलते हैं. विदर्भस्तर की जानी-मानी महिला रोग व प्रसूति विशेषज्ञ डॉ.प्रांजलताई शर्मा ऐसी ही व्यक्ति हैं, जिनका मेरे जीवन में सदैव सम्माननीय स्थान हैं. आत्मीयता, रिश्तों को लेकर संजीदगी के साथ ही गरीब महिला मरीजों की मदद जैसे उनके गुण ही उन्हें लाखों महिलाओं की चहेती बनाते हैं. पिछले तीस वर्षों के दौरान एक भाई के रूप में उन्हों ने जो अपनापन दिया, मुसीबत में सदा खड़ी रहती हैं, इसके लिए मैं स्वयं को भाग्यशाली समझता हूं. आज जब सगे रिश्ते बेईमान हो जाते हैं, ऐसे दौर में डॉ.प्रांजल दीदी सदा हिम्मत देने का काम करती हैं. उनके 11 सितंबर को जन्मदिन पर विदर्भ स्वाभिमान अखबार परिवार की मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

श्रीमद् भागवत गीता में जैसा भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि पूर्व जन्म के संबंधों के अलावा आमतौर पर करोड़ों लोगों की दुनिया में कुछ ही लोगों को हम दिल में रखते हैं. ऐसे लोगों में यह दोनों हैं. डॉ.प्रांजल शर्मा के जन्मदिन पर हमारी मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

वैद्यकीय क्षेत्र केवल बीमारी का उपचार करने का माध्यम नहीं, बल्कि मानव सेवा का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है. जब एक डॉक्टर अपने पेशे के साथ संवेदनशीलता, विनम्रता और मानवीय मूल्यों को जोड़ता है, तब वह समाज के लिए आदर्श बन जाता है. इसी सोच को अपने कार्य और व्यवहार से आगे बढ़ाने वाले चिकित्सकों में डॉ. प्रांजल राजेश शर्मा का नाम सम्मान के साथ लिया जा सकता है. शहर ही नहीं तो विदर्भस्तर पर लाखों महिलाओं को बेहतरीन सेवा देकर उनके दिल में स्थान बनाया है. अमरावती के पड़ोसी जिले से भी महिलाएं आती हैं और खुश होकर यहां से जाती हैं.

अमरावती में स्त्रीरोग एवं प्रसूति विशेषज्ञ के रूप में सेवाएं देने वाले डॉ.

प्रांजल शर्मा के लिए चिकित्सा का अर्थ केवल उपचार तक सीमित नहीं, बल्कि मरीज को विश्वास और मानसिक संबल देना भी है. उपलब्ध सार्वजनिक प्रोफाइल में उनकी विशेषज्ञता स्त्रीरोग एवं प्रसूति चिकित्सा के रूप में दर्ज है.एक आदर्श डॉक्टर की पहचान उसकी विशेषज्ञता के साथ उसके व्यवहार से भी होती है. मरीज जब कठिन परिस्थिति में डॉक्टर के पास पहुंचता है, तब उसे दवाइयों के साथ भरोसे और अपनत्व की भी आवश्यकता होती है. डॉ. प्रांजल शर्मा के संबंध में उपलब्ध मरीज प्रतिक्रिया में उनके अच्छे परामर्श और सहज व्यवहार की सराहना देखने को मिलती है. साथ ही महिला मरीजों में उनके प्रति अपार सम्मान है. वह कहती हैं कि सच्ची चिकित्सा वही है, जिसमें ज्ञान के साथ करुणा और सेवा की भावना जुड़ी हो.मरीजों की समस्याओं को समझना, उन्हें उचित मार्गदर्शन देना और उपचार के दौरान आत्मविश्वास बनाए रखना एक संवेदनशील चिकित्सक की बड़ी जिम्मेदारी है,जो वे सदा निभाती हैं.आज के समय में जब चिकित्सा क्षेत्र में तकनीक और आधुनिक सुविधाओं का महत्व लगातार बढ़ रहा है, तब मानवीय संवेदना का महत्व भी उतना ही जरूरी है.डॉ. प्रांजल शर्मा जैसे डाक्टरों के कारण पेशे को सेवा और मानवता से जोड़ने की प्रेरणा मिलती है. उनका कहना है कि परमात्मा ने जो जिम्मेदारी उन्हें सौंपी है, इसका वह अपनी ओर बेस्ट तरीके से कार्य कर पूरा करने का काम करती हैं. अमरावती जिला महिला रोग प्रसूति संगठन की पदाधिकारी के रूप में उनका कार्य भी यादगार साबित हुआ. वे कहती हैं जो जिम्मेदारी सौंपी जाए, उसका सही तरीके से निर्वहन भी किसी पूजा से कम नहीं होता है. बातचीत में सादगी के साथ वे अनुशासन पसंद हैं. यही कारण है कि अस्पताल के सभी कर्मचारी भी उन्हें माता-पिता समान मानते हैं और वे भी उनकी समस्याओं का सदा निराकरण करने तत्पर रहती हैं. ज्ञान, सेवा, संवेदनशीलता और मानवता का सुंदर संगम ही एक डॉक्टर को आदर्श बनाता है. इसी दृष्टि से डॉ. प्रांजल शर्मा क्षेत्र में मानवीय मूल्यों की मिसाल के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल रही हैं. राज्यपाल के हाथों पुरस्कार सहित अभी तक कई दर्जन पुरस्कार उनके काम का सबसे मजबूत सबूत हैं.

विदर्भ स्वाभिमान,अमरावती.

सेवाभावी महिला नेत्री हैं ज्योति औघड़

विदर्भ स्वाभिमान क़ी जन्मदिन पर विशेष शुभकामनाएं

विदर्भ स्वाभिमान

शिवसेना की समर्पित नेत्री के साथ ही सेवाभाव और सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहने वाली सौ. ज्योति कैलाश औघड सेवाभावी नेत्री तथा समाजसेविका हैं. समाज के कल्याण की भावना से ओतप्रोत रहने के साथ ही पार्टी के साथ ही समाजसेवा के प्रति वह सदैव सजग रहती हैं. कई संगठनों में जिम्मेदारी निभाने वाली ज्योति ताई काम को पूजा मानती हैं. उनकी व्यस्तता के बाद भी परिवार और समाजसेवा के बीच बेहतरीन संतुलन बनाए रखती हैं. समाजसेवा केवल पद या राजनीति तक सीमित नहीं होती, बल्कि जरूरतमंदों के सुख-दुख में साथ खड़े होने और समाज के हित के लिए निरंतर कार्य करने का नाम है. इसी सेवाभावी सोच और समर्पण के कारण ज्योति औघड़ एक संवेदनशील एवं समर्पित महिला नेत्री के रूप में अपनी पहचान बना रही हैं.

ज्योति औघड़ का व्यक्तित्व सेवा, संवेदना और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना से जुड़ा हुआ है. समाज के विभिन्न वर्गों की समस्याओं को समझना और उनके समाधान के लिए प्रयास करना उनकी कार्यशैली की विशेषता मानी जाती है. उनका मानना है कि जनप्रतिनिधि या सामाजिक कार्यकर्ता का वास्तविक दायित्व लोगों के बीच रहकर उनकी आवाज को मजबूती देना है.महिला नेतृत्व की आज समाज में महत्वपूर्ण भूमिका है. महिलाएं परिवार के साथ-साथ सामाजिक और सार्वजनिक जीवन में भी प्रभावी योगदान दे रही हैं. इसके साथ परिवार और रिश्तों के मामले में आगे हैं. ज्योति औघड़ इसी सकारात्मक महिला नेतृत्व की मिसाल बनने की दिशा में कार्य कर रही हैं. जरूरतमंदों के प्रति संवेदनशीलता और समाज के लिए कुछ करने की भावना उनके व्यक्तित्व को विशेष बनाती है.उनके लिए सेवा किसी प्रचार का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक दायित्व है. यही कारण है कि सेवाभाव, समर्पण और जनहित को केंद्र में रखकर आगे बढ़ने वाली उनकी सोच लोगों के लिए प्रेरणादायी बनती है.समाज के प्रति संवेदना, जरूरतमंदों के प्रति अपनापन और जनहित के लिए समर्पित प्रयास के कारण ही स्वयं के बलबूते सौ. ज्योति औघड़ ने समाज में अपना स्थान बनाया है. पति का साथ बेटे के प्रोत्साहन को महत्वपूर्ण मानती हैं. उनके जन्मदिन पर विदर्भ स्वाभिमान परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं.

गुरूवार 10 से 16 सितंबर 2026

वृषभ-आज आपका मन अशांत रहेगा, व्यापार-व्यवसाय में नुकसान उठाना पड़ सकता है. कोई बड़ा काम आपके हाथ से निकल सकता है. आज आप पारिवारिक मतभेद में उलझ सकते हैं. आप कोई बड़ा जोखिम आज व्यापार मे न उठाएं. पार्टनर के स्वास्थ्य के कारण चिंतित रह सकते हैं.

मिथुन- आज का दिन आपका शानदार रहेगा, मन स्थिर और प्रसन्न रहेगा. वाणी के प्रभाव से आज आपके रुके हुए काम पूरे होंगे. किसी विशेष व्यक्ति से मिलना होगा. आज कोई नया व्यापार आप शुरू कर सकते है, पार्टनर के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

कर्क- आज का दिन आपका सोच विचार कर काम करने का है. आप कोई बड़ा डिसीजन व्यापार-व्यवसाय में न लें, नई साझेदारी में सावधानी बरतें. स्वास्थ्य का ध्यान रखें, पार्टनर के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी. आप आज वाहन आदि के चलाने में सावधानी बरतें.

सिंह-आज आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें. व्यापार-व्यवसाय में अपने सहयोगी पार्टनर्स से सावधान रहें, नहीं तो आपका काम बिगड़ सकता है. कोई नया लेन-देन आज न करें, वाहन चलाते समय सावधानी बरतें.

कन्या- इस सप्ताह आप नया वाहन आदि खरीद सकते है, परिवार में नया मेहमान आ सकता है. आपको कोई नए कार्य का बड़ा ऑफर आज मिल सकता है, किसी पुराने मित्र से मिलना होगा. स्वास्थ्य का ध्यान रखें, परिवार में मांगलिक कार्य के योग बनेंगे.

तुला-आज का दिन आपका बहुत अच्छा रहने वाला है, आज आप कोई नया बिजनेस शुरू कर सकते हैं. आपनों का साथ मिलेगा, परिवार में मांगलिक कार्यक्रम होंगे. कोई नया वाहन मकान खरीद सकते हैं,किसी धार्मिक यात्रा पर जा सकते हैं.

वृश्चिक-आज आप किसी अपने के स्वास्थ्य को लेकर परेशान रहेंगे, माता-पिता का स्वास्थ्य अचानक बिगड़ सकता है. व्यापार-व्यवसाय में अपने पार्टनर का आज आपको सहयोग मिलेगा. कोई बड़ा काम आज आप शुरू कर सकते हैं काम में रुकावट जरूर आएगी. वाणी पर संयम रखें.

धन्-आज के दिन आप वाहन आदि के चलाने में सावधानी बरतें. किसी काम का बहुत दिनों से सोच रहे हैं आज वह काम पूरा होगा. न्यायालय पक्ष के काम में आपको नुकसान उठाना पड़ सकता है. वाणी पर संयम रखें, वाद विवाद की स्थिति में अपना बचाव करें.

मकर- सप्ताह में आपको कोई सुखद समाचार मिलेगा, परिवार में मांगलिक कार्यक्रम का योग बनेगा. आप कोई नया निवेश व्यापार-व्यवसाय में कर सकते हैं. पार्टनर का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, पारिवारिक माहौल अच्छा रहेगा.

कुंभ- यह सप्ताह आपके लिए उत्साहवर्धक रहने वाला है. इस दौरान अपना व्यवसाय शुरू करने के बारे मेंसोच सकते हैं. व्यापार में कोई बड़ा परिवर्तन कर सकते हैं. कार्यक्षेत्र में पार्टनर का अच्छा सहयोग मिलने से कार्यक्षेत्र में लाभ होगा. परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा.

मीन- इस सप्ताह स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा. आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है. आप परिवार के किसी सदस्य के कारण परेशानी में पड़ सकते हैं. संतान की चिंता बनी रहेगी, व्यापार-व्यवसाय में सहयोगी से मतभेद बढ़ सकते है, आज आप किसी नए काम के लिए विचार कर सकते हैं. पारिवारिक विवाद से दूर रहें.

आपका सप्ताह शुभ हो, विदर्भ स्वाभिमान यही कामना करता है.

बाढ़ से सुरक्षा की दीवार बन गई खतरा,उत्तरी अमेरिका को भारी नुकसान

वाशिंगटन-पिछली सदी में मिसिसिपी नदी के किनारे लगभग 2,000 किलोमीटर लंबे तटबंध बनाए गए. इनसे शहरों और खेती की जमीन को बाढ़ से सुरक्षा मिली, लेकिन उत्तरी अमेरिका को भारी पर्यावरणीय नुकसान भी हुआ.

बाढ़ रोकने वाले इस सिस्टम ने तटीय मुहानों को नदी की जरूरी गाद से अलग कर दिया. नतीजतन 1930 के दशक से अब तक लुइसियाना की करीब 4,900 वर्ग किलोमीटर तटीय जमीन खत्म हो गई. इसके कारण बड़े पैमाने पर पर्यावरण का नुकसान हुआ है, जिसकी गणना नहीं की जा सकती है. हर साल की बाढ़ में डेल्टा पर ताजी गाद न फैल पाने से दलदली इलाके धीरे-धीरे मैक्सिको की खाड़ी में डूब गए.यूनाइटेड स्टेट्स जियोलॉजिकल सर्वे (यूएसजीएस) के नक्शों के अनुसार 1932 से 2010 के बीच लगभग 1,900 वर्ग मील तटीय भूमि गायब हो गई.पुराने समय में वसंत की बाढ़ में नदी का पानी किनारों से बाहर बहता था. लाखों टन गाद, रेत और जैविक पदार्थ डेल्टा पर फैलते थे. इससे जमीन के धंसने की भरपाई होती और तट तूफानों से सुरक्षित रहता.

20वीं सदी की भीषण बाढ़ों के बाद अमेरिकी आर्मी कॉर्प्स ऑफ इंजीनियर्स ने निचले हिस्से में तटबंध नेटवर्क बना दिया. गाद अब तटीय इलाकों में जमा होने के बजाय सीधे गहरे समुद्र में चली जाती है.

नुकसान के कारण और समाधान-यूएसजीएस सर्कुलर 1375 के विश्लेषण में पाया गया कि कृत्रिम तटबंधों, नेविगेशन चैनलों और तेल उद्योग की नहरों ने पानी के बहाव को बदल दिया. नई गाद न मिलने से खारा पानी अंदर घुस गया, दलदली पौधे मर गए और मिट्टी बह गई. पौधों के मरने से पर्यावरण की दृष्टी से भारी नुकसान हुआ है, इसका आकलन सरकारी एजेंसी कर रही है. अब एजेंसियां पुरानी नीति उलट रही हैं. वे नदी की गाद को फिर से खराब खाड़ियों में पंप कर तटरेखा बना रही हैं.

बढ़ते वन्यजीवों के आतंक से भयभीत

अमरावती-शहर के विद्यापीठ मार्ग के साथ ही जिस तरह से जिले में बाघ और तेंदुए की दहशत बढ़ गई है, उसके चलते आम लोगों में जहां दहशत है, वहीं यह स्थिति क्यों पैदा हो रही है, इस पर चिंतन करने तथा वन विभाग की कार्यप्रणाली को भी सुधारने की जरूरत जताई जा रही है. मेलघाट से चांदूर रेलवे तक तेंदुए के आतंक से लोग भयभीत हैं. तपोवन के करीब तथा मार्डी रोड पर भी गुजरने वाले बाइक सवार डरे हुए हैं. इस रोड पर तेंदुए ने कईयों पर हमला कर घायल भी किया है.

सन् 1967 पासून
अमरावती शहरात
वाजवी दरात
सर्वात जास्त
प्लाटस्चे सौदे
करणारे एकमेव
इस्टेट एजंट
संजय एजंसीज्
टाऊन हॉल समोर,
नेहरू
मैदान,अमरावती.फोन
2564125,2674048

विदर्भ स्वाभिमान
RNI NO. MAHMIN / 2010 /43881
संपादक : सुभाषचंद्र दुबे प्रबंधक : सौ. विणा एस. दुबे

जाहीर सुचना	10x2	500
जाहीर सुचना	15x2	1000
बच्चों का जन्मदिन	10x2	500
शादी की वर्षगांठ	10x2	500
नाम में बदल	10x2	500
गुमशुदा	10x2	400
श्रध्दांजलि	10x2	500
पुण्यस्मरण	15x2	1000

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी, अमरावती
मो. 9423426199/ 8855019189

गुणवत्ता विश्वसनीयता तत्पर सेवा
शालेय, महाविद्यालयीन पाठ्य पुस्तक, सामान्य ज्ञान स्पर्धा की विभिन्न किताबे, रजिस्टर, नोटबुक्स, कम्पास सहित सभी प्रकार की फाइलें,बुक्स, स्टेशनरी का एकमात्र विश्वसनीय स्थान. रियायती कीमत तथा तत्पर सेवा ही हमारी विशेषता है.
--संपर्क--
प्रथमेश बुक व जनरल स्टोअर्स, रविनगर चौक, अमरावती.

संवेदनशील नेतृत्व हैं ज्ञानेश्वर धाने पाटिल

जन्मदिन पर विशेष

शिवसेना शिंदे की मजबूती में है महत्वपूर्ण भूमिका,कार्यकर्ताओं में अपार लोकप्रिय

जिले में शिवसेना शिंदे गुट के वरिष्ठ नेता तथा उपनेता बनाए गए ज्ञानेश्वर धाने पाटील संवेदनशील नेता क़े साथ ही जनता की समस्याओं को समझने और उसका निराकरण करने में सदा अग्रणी रहते हैं.अंबाविहार निवासी और जिले में व्यापक संपर्क रखने वाले धाने पाटील को सामाजिक कामों में पहले ही अपार उत्साह रहा है. उन्हें जन्मदिन पर मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

लोकप्रिय नेता और सामाजिक के साथ ही ग्रामीण क्षेत्र के लाखों छात्रों का जीवन संवारने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देने वाले पूर्व विधायक ज्ञानेश्वर धाने पाटील समर्पित, निष्ठावान, बेबाक और सामाजिक कार्यों में समर्पित नेता हैं. उनके जन्मदिन पर विदर्भ स्वाभिमान की करोड़ों मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. भाऊ जहां सादगी की मिसाल हैं, वहीं दूसरी ओर कार्यकर्ताओं के चहेते नेता हैं.शिवसेना शिंदे गुट में शामिल होने के बाद उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने उन्हें पार्टी में उपनेता का पद दिया है. यह इस बात का उदाहरण है कि उनकी कर्मठता कितनी बेहतरीन है. ग्रामीण क्षेत्र में गरीब बच्चों की शिक्षा

की बेहतरीन व्यवस्था करते हुए लाखों बच्चों का जीवन संवारने वाले जुझारू नेता के रूप में ज्ञानेश्वर धाने पाटिल को पहचाना जाता है. उन्होंने जहां पार्टी की मजबूती में स्वयं को झोंक दिया है, वहीं पार्टी से बिना चाहत रखे केवल और केवल पार्टी मजबूती के लिए सदैव प्रयासरत हैं. किसानों की समस्या हो, लोगों की समस्या हो, वे सदैव जूझने के लिए तैयार रहते हैं.दो बार विधायक रहने के बाद भी कोई गर्व नहीं है. पार्टी के कार्यकर्ताओं को जहां वे पुत्रवत मानते हैं, वहीं कहते हैं कि पार्टी के कार्यकर्ता ही असली ताकत होते हैं. ऐसे में कार्यकर्ताओं को सदैव सम्मान दिया जाना चाहिए. शिंदे गुट में भी उन्हें अल्प समय में अपार लोकप्रियता मिली है. वे कहते हैं कि जो कुछ भी उन्हें मिला है ,उनके आराध्य बालासाहब ठाकरे और पार्टी प्रमुख उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की देन है. जिन्होंने राज्य की जनता में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है. जिले में शिवसेना शिंदे गुट को मजबूती प्रदान करने में अपना हरसंभव प्रयास किया और कर रहे हैं. पार्टी प्रमुख एकनाथ शिंदे को निश्चल नेता बताते हुए वे कहते हैं कि राज्य की जनता उन्हें दिल से चाहती है. मुख्यमंत्री पद के लिए सबसे बेहतरीन नेता रहने की बात वे कहते हैं. राजनीति के अलावा ग्रामीण क्षेत्र में गरीब छात्रों को बेहतरीन शिक्षा उपलब्ध कराने, किसानों को न्याय दिलाने के लिए आंदोलन में सदैव अग्रणी रहते हैं. धाने पाटिल संवेदनशील नेता हैं.राजनीति को समाजसेवा का माध्यम मानने वाले धाने पाटिल का कहना है कि मानवता की सेवा सबसे बड़ी सेवा होती है. इसलिए दलगत भावना से ऊपर उठकर सदैव यह की जानी चाहिए. जब हम मानवता की सेवा करते हैं तो इससे मिलने वाला संतोष कभी भुलाया नहीं जा सकता है.शिवसेना शिंदे गुट क़ी मजबूती को सर्वाधिक प्राथमिकता देने वाले धाने पाटिल का 15 सितंबर को जन्मदिन है.विदर्भ स्वाभिमान की करोड़ों मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. वे स्वस्थ रहें, मस्त रहें, यही मां भवानी के चरणों में कामना.

विदर्भ स्वाभिमान

स्वच्छता ही सेवा क़ा देश में 17 सितंबर से चलेगा महाअभियान

एक महीने तक चलेगा व्यापक सफाई अभियान घरों में सफाई के साथ मोदी के जन्मदिन पर दीपक जलाने का आग्रह

नई दिल्ली/अमरावती- केन्द्र सरकार ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन से एक महीने तक देश में स्वच्छता का महाअभियान चलाने का फैसला किया है. अमरावती शहर के साथ ही राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर इस दौरान विभिन्न स्वच्छता उपक्रम चलाए जाएंगे. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन पर स्वच्छता अभियान के साथ ही हर घर में एक दीपक जलाने का आग्रह भी किया गया है.

केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों और ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल ने आज राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के शहरी विकास मंत्रियों, प्रमुख सचिवों और राज्य मिशन निदेशकों के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता की. इस बैठक का मुख्य उद्देश्य आगामी 'स्वच्छता ही सेवा' 2026 अभियान के लिए सभी राज्यों की तैयारियों की व्यापक समीक्षा करना था. बैठक के दौरान अधिकारियों को देशभर में समन्वित कार्रवाई करने और सभी सरकारी कार्यालय परिसरों, पर्यटन स्थलों तथा जल निकायों में स्वच्छता अभियान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए.

यह राष्ट्रव्यापी स्वच्छता अभियान 17 सितंबर से शुरू होकर 17 अक्टूबर 2026 तक चलाया जाएगा. इस वर्ष के लिए अभियान की थीम 'स्वच्छता में सहभाग, स्वच्छ भारत, विकसित भारत' रखी गई है, जो एक स्वच्छ और विकसित राष्ट्र के निर्माण में सामूहिक भागीदारी और साझा जिम्मेदारी के महत्व को रेखांकित करती है. अभियान के मुख्य फोकस क्षेत्रों में स्वच्छता लक्ष्य इकाइयों और अधिक भीड़-भाड़ वाले सार्वजनिक स्थानों का कायाकल्प, 'स्वच्छ पाठशाला-युवा फॉर स्वच्छता', सफाईमित्र सुरक्षा एवं सम्मान शिविर, जन भागीदारी और सर्कुलर इकॉनमी (वेस्ट-टू-वेल्थ) पर आधारित 'स्वच्छता से समृद्धि' जैसी महत्वपूर्ण पहलें शामिल हैं.

मोदी के जन्मदिन पर घरों में सफाई और दीये जलाएं-केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने देशवासियों से आह्वान किया कि वे 17 सितंबर को अपने घरों से ही 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान की शुरुआत करें. उन्होंने लोगों से अपील की कि वे स्वयं अपने घरों की सफाई करें और शाम को घर में एक दीया जलाएं, जो स्वच्छ घर, स्वस्थ परिवार और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक होगा. मंत्री महोदय ने बताया कि यह अभियान 17 सितंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर शुरू हो रहा है, जिसका उद्देश्य प्रधानमंत्री की सेवा भावना को स्वच्छता के इस महासंकल्प के साथ जोड़ना है. प्रधानमंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि जब स्वच्छता नागरिकों का सामूहिक संकल्प बन जाती है, तो वह केवल सफाई तक सीमित न रहकर उस स्थान की पूरी पहचान बदल देती है.

मोदी के जन्मदिन पर क़ई कार्यक्रम-अमरावती भाजपा द्वारा भी प्रधानमंत्री तथा देश के सबसे लोकप्रिय नेता नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन पर कई सामाजिक उपक्रमों का आयोजन किया जा रहा है. इसमें रक्तदान शिविर, स्वच्छता अभियान के साथ ही अन्य कई कार्यक्रमों का समावेश है. लोगों से इसमें शामिल होने तथा सफल बनाने का आग्रह किया है.

विदर्भ स्वाभिमान खटकता सच

ज़ीवन में यह कदापि नहीं सोचना चाहिए कि हमारे भरोसे कोई है. बल्कि सदा प्रभु की कृपा मानते हुए यह सोचें कि धन्य हैं परमात्मा जिन्होंने हमें इस लायक बनाया कि हम किसी के काम आ पा रहे हैं. वर्ना करोड़ों की इस दुनिया मैं ऐसे भी लोग हैं जिन्हें माता-पिता का साया नहीं है और न ही कभी किसी को अपनों का प्रेम मिल पाता है. कई दिव्यांग हैं बावजूद इसके परमात्मा की कृपा से सदा आगे बढ़ रहे हैं. कमियों की बजाय इसे जब हम ताकत बनाते हैं तो प्रभु तो अपनी संतान को सदा आशिर्वाद देने के लिए उतावले ही रहते हैं.

सुभाष दुबे संपादक www.vidarbhswabhiman.com